International Journal of Applied Research 2019; 5(1): 261-262

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 261-262
www.allresearchjournal.com
Received: 18-11-2018
Accepted: 29-12-2018

डॉ. संतोष कुमार सिंह
सहायक आचार्य, हिंदी–विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. संतोष कुमार सिंह
सहायक आचार्य, हिंदी–विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश, भारत

मध्यवर्गीय समाज के लेखक अमरकांत

डॉ. संतोष कुमार सिंह

प्रस्तावना

समाज में परिवर्तन होना एक प्रक्रिया है, दुनिया में शायद ही कोई ऐसा समाज हो जो परिवर्तन से अछूता हो परिवर्तन के इस दौर में मनुष्य अभिव्यक्ति के लिए माध्यम चुनता है, जिसमें समाज की संस्कृति रहन–सहन खान–पान आदि परिलक्षित होता हैं।

हिन्दी कथा साहित्य में स्वतंत्रता के बाद भारतीय जीवन के विविध पक्षों की अभिव्यक्ति हुई है। स्वाधीनता के बाद देश की सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक धार्मिक परिस्थितियॉ उभर कर आयी उसने और अर्थव्यवस्था या पूॅजीवाद ने मिलकर एक नये वर्ग को जन्म दिया जो मध्य वर्ग या निम्नमध्य वर्ग कहलाया।

स्वतंत्रता के कुछ समय बाद लोगों ने समझ लिया कि देश स्वतंत्र नही हुआ, बल्कि 'सत्ता का हस्तांतरण' हुआ है, क्योंकि परिस्थितियों में कोई परिवर्तन नही आया है अब अर्थ (धन) शक्ति का पर्याय बन गया। समाज का स्थान धीरे–धीरे पूॅजीवादी ने ले लिया ऐसे में आम–आदमी की जिंदगी बद से बदत्तर होती गयी और नई–नई समस्याएँ उत्पन्न होने लगी जैसे– जातिवाद बढ़ा, संघर्ष बढ़े शोषण हिंसा, लूटमार, स्त्री पर अत्याचार, साम्प्रदायिकता बलात्कार आदि लोगों का लक्ष्य कुर्सी पाने और धन संचय तक ही सीमित हो गया, जिससे गरीबी, बेरोजगारी भ्रष्टाचारी अधिकारियों की निरंकुशता बढ़ी। इन परिवर्तनो का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर स्पष्ट रूप से पड़ा।

प्रख्यात कथाकार अमरकान्त (1925–2014 ई०) ने अपने कथा साहित्य सृजन के केन्द्र इन्ही सब बातों पर ध्यान केन्द्रित किया, अमरकान्त ने अपने साहित्य में जन सामान्य की जिन्दगी और जमीन से जुड़े मानवीय आशा आकांक्षाओ व जीवन संघर्षो को विविध दृष्टिकोण से उद्घाटित किया और भौतिकता के युग में शून्य पड़ती मानवीय संवेदना के समक्ष सामान्यतः छोटी से छोटी समस्याओं को गम्भीरता से उठाया है। इन्होने अपने साहित्य में मध्यवर्गी तथा निम्नमध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ अंकन किया है।

अमरकान्त नई कहानी के दौर के कथाकार है। लेकिन कई मायनों में अमरमान्त अपने समकालीन साहित्यकारो से अलग थे। अमरकान्त के संदर्भ में राजेन्द्र यादव लिखते है कि 'अमरकान्त टुच्चे, दुष्ट और कमीने लोगो के मनोविज्ञान का मास्टर है उनकी तर्क पद्धति मानसिकता और व्यवहार को जितनी गहराई से अमरकान्त जानता है, मेरे ख्याल से हिन्दी का कोई दूसरा लेखक नही जानता।''

अमरकान्त की मुख्य दुनिया कस्बाई मध्यवर्ग है और कुछ कहानियों में उसी वर्ग के अन्तर्गत निम्नवर्ग भी आ गया और दोनो के तनाव से कथ्य बना है। 'डिप्टी कलेक्टरी' में एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की बनती और टूटती आकांक्षा और उसके लिए लहूलुहान होने परिवार के लोगों के संबंध की मर्म कथा है, जिसमें शकलदीप बाबू विपरीत परिस्थितियों से घबराते नही बल्कि जूझते है, वह ऋण लेकर नारायण को डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा में बैठाते है। अमरकान्त अपनी कहानी 'जिन्दगी और जोंक' में 'रजुआ' जैसे निम्नमध्यवर्गीय पात्रो के साथ तो सहानुभूति दिखलाते है पर उनकी परिस्थितियों के प्रति उतने ही निर्मम दिखाई पड़ते है। 'दोपहर का भोजन' सर्वाधिक प्रभावित करने वाली कहानी में से एक है, इस कहानी में अभावग्रस्त मध्यवर्गीय परिवार की भूख और विवशता का बड़ा सहज और सशक्त चित्रण हुआ है।

कहानी के केन्द्र में मॉ है, वह अभाव भोगती ही नही है वह घर में सेतु भी बनी रहती है। 'हत्यारे' कहानी हमारी वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के ऊपर एक पैना व्यंग्य है, कहानी के वे हत्यारे युवक अपने में अकेले नही बल्कि उनके समान धर्माओ की बाढ़ बड़ी तेजी से हमारे देश में बढ़ती चली जा रही है, ये अपनी बुद्धिमानी मौलिकता साहस और कर्मठता का उदाहरण दूसरे के हक को छीनने व बलात्कार करने से ही दे पाते है।

समाज में व्याप्त समस्या का अमरकान्त ने अपनी कहानियो के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है जिसमें किसान से मजदूर तक तथा मध्यवर्ग से लेकर निम्न मध्य वर्ग की कथा–व्यथा है।

'मूस' अमरकान्त की चर्चित कहानी है जिसमें पात्र पहले किसान रहता है बाद में शहर आकर मजदूर बन जाता है, मजदूर वर्ग की स्थिति समाज में बड़ी दयनीय होती है, उनको रोज कमाना और रोज खाने की स्थिति से गुजरना पड़ता है। 'मौत का नगर' कहानी में दिखाया गया है कि समाज में होने वाली सामाजिक दुर्घटनाओं का असर समाज में निम्नवर्गीय भाग पर ही पड़ता है। अमरकान्त अपनी कहानी के माध्यम से स्त्री मनोविज्ञान को भी बखूबी परखा है जो इनकी कहानियो में परिलक्षित है जैसे– 'दोपहर के भोजन' में सिद्धेश्वरी विजेता में नीलम, लड़का–लड़की में कहानी में तारा आदि कहानियो में नारी जीवन की सच्चाई एवं विडम्बना को दिखाया गया हैं।

अमरकान्त की कहानियो का शिल्प बिल्कुल सहज और स्वाभाविक है, स्थितियॉ एक बाद एक सहज रूप में आती है और उनके माध्यम से कहानी के मूल संवेदना व्यंजित हो जाती है, इनकी भाषा जीवन यथार्थ के अनुकूल होती है इसीलिए कहानी का कथ्य पाठक के मन पर सीधा प्रभाव डालता है।

अमरकान्त कहानियो के साथ ही साथ उपन्यास साहित्य को भी एक नई दिशा दे रहे थे, अमरकान्त उपन्यास के द्वारा एक बड़े फलक पर देश की सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक विषमताओ को रेखांकित करने का प्रयास किया।

अमरकान्त के उपन्यासो के केन्द्र में मध्यवर्ग या निम्नमध्यवर्ग रहा है इस वर्ग की महिलाओ की संघर्ष कथा ग्राम सेविका तथा सुभर पाण्डेय की पतोहू में व्यक्त हुई है। युवाओ की विभिन्न स्थितियो को 'सूखा पत्ता', 'काले उजले दिन' तथा कॅटीली राह के फूल प्रस्तुत करते है।

अमरकान्त जी समाज के हर स्तर पर निम्नमध्य वर्गी लोगो की उपस्थिति देखी। अपने उपन्यास 'आकाश पक्षी' में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज के अन्तर्विरोध की ओर संकेत किया है, भारत को राजनीतिक आजादी प्राप्त हो गयी किन्तु अभी समाज में सामंतवादी संस्कार मूलबद्ध है, जो प्रगतिशील शक्तियों को आगे बढ़ने में बाधा पहुचाते है।

अमरकान्त के उपन्यासो और कुछ कहानिये की उपर्युक्त विवेचना के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि अमरकान्त अपने कथा साहित्य के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज का व्यापक विस्तृत गहन चित्रण है। अपने मध्यवर्गीय समाज के साथ अमरकान्त की पूरी सहानुभूति दिखाई देती है। पर इन परिस्थितियों के चित्रण में अमरकान्त एक निर्मम दिखाई पड़ते हैं।

सहायक ग्रन्थ सूची

1. कहानी अनुभव और अभिव्यक्त : राजेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन
2. उपन्यास समय और संवेदना : विजय बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन
3. उपन्यास का पुनर्जन्म : परमानन्द श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन
4. हिन्दी साहित्य : बीसवी शताब्दी : नन्ददुलारे वाजपेयी, लोक भारती इलाहाबाद
5. हिन्दी उपन्यास का इतिहास : गोपाल राय, वाणी प्रकाशन
6. हिन्दी कहानी का इतिहास : गोपाल राय, वाणी प्रकाशन
7. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोक भारती इलाहाबाद
8. कहानी के नए प्रतिमान : कृष्ण कुमार वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
9. आदमी की निगाह में औरत : राजेन्द्र यादव वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
10. बीसवी सदी के अन्त में कहानी : विष्णु खरे

पत्र–पत्रिकाएँ

1. बहुवचन : वर्धा
2. नया ज्ञानोदय : नई दिल्ली
3. वर्तमान साहित्य : इलाहाबाद
4. कथादेश : नई दिल्ली
5. पहल : जयपुर
6. समीक्षा : नई दिल्ली
7. वागर्थ : कोलकाता
8. लमही : लखनऊ
9. कथाक्रम : लखनऊ